Digital News Letter

पुनर्नवा

.....bouncing back to life again and again....

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

आपदा प्रबंधन विभाग, बिहार सरकार

बिहार सरकार

कोरोना से बचाव

कोरोना संक्रमण खांसने तथा छींकने, व्यक्तिगत संपर्क यथा छूने या हाथ मिलाने, फिर बिना हाथ धोए अपने नाक, मुँह या आँखों को छूने से फैलता है।

बचाव के उपाय निम्न हैंः–

सभी माता–पिता और अध्यापक बच्चों के लिए आदर्श बनेंः–

- भीड़–भाड़ वाली जगह पर मास्क पहनें और दो गज की दूरी बना कर रखें।
- हाथों को बार–बार साबुन और पानी से धोएँ।
- घर से बाहर या विद्यालय में हमेशा मास्क पहन कर रहें।
- खाँसते और छींकते समय मुँह और नाक को ढकें।
- कोविड–19 का टीका अवश्य लगवाएँ।

कोरोना में समझदारी दिखाएँ, निम्न जरूरी आदत अपनाएँ।

विद्यार्थियों को क्या करना है?

- मास्क का हर समय उपयोग करें।
- समय–समय पर साबुन से हाथ धोएँ।
- पीने के लिए साफ पानी घर से लाएँ।
- सेनिटाइजर अपने पास रखें और इसका इस्तेमाल करें।
- सर्दी–खाँसी या बुखार के लक्षण महसूस होने पर तुरंत शिक्षक को बताएँ।

कोरोना में अपना ध्यान रखना है जरूरी, इन चीजों से रखें दूरीः–

विद्याार्थियों को क्या नहीं करना है?

- किसी भी स्थान को अनावश्यक कारणों से न छुएँ। यहाँ–वहाँ न थूकें।
- अपना टिफिन किसी के साथ साक्षा न करें।

विषय सूची

क्र.सं	विषय	लेखक	पेज सं.
1	संपादकीय		04
2	‘‘इनसे मिलिए’’ कार्यक्रम		05
3	मॉनसूनः–एक परिचय	आनंद शंकर/आशीष कुमार, मौसम वैज्ञानिक	06
4	भू-जल दोहन भयावह हालात में	पंकज मालवीय, जल एवं पर्यावरण विशेषज्ञ	10
	प्राधिकरण की गतिविधियां		
5	बिहार दिवसः प्राधिकरण के पेवेलियन में मिली आपदा से सुरक्षा की महत्वपूर्ण जानकारियां, 50 हजार लोगों ने पेवेलियन का किया भ्रमण		14
6	मुजफ्फरपुर इंडस्ट्रीयल एरिया में ब्यॉलर विस्फोटः संयुक्त समिति की ऑनलाइन बैठक		20
7	सड़क दुर्घटनाओं में त्वरित कार्रवाई के लिए बैठक		20
8	भूकम्परोधी निर्माण तकनीक के लिए प्रशिक्षण		21
9	वज्रपात से बचाव संबंधी मार्गदर्शिका के संदर्भ में माननीय मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में हुई बैठक		22
10	मुख्यमंत्री विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम (MSSP)		22
11	जीविका दीदियों का तीन दिवसीय मास्टर ट्रेनर के लिए प्रशिक्षण		23
12	अस्पताल अग्नि सुरक्षा कार्यक्रम		24
13	बहु–आपदा जोखिम न्यूनीकरण के लिए सामुदायिक स्वयंसेवकों का प्रशिक्षण		25
14	पंचायत संसाधन केन्द्र (DPRC) के पदाधिकारियों का प्रशिक्षण		25
15	बिहार में गर्म हवाएं/लू की कार्य योजना के लिए कार्यशाला		27
16	NDMA और BSDMA द्वारा Heat Wave पर राष्ट्रीय कार्यशाला		27
17	मुख्यमंत्री विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रमः फोकल शिक्षकों का ऑनलाइन संवेदीकरण		28
18	सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिये ऑनलाइन परिचर्चा		29
19	कोविड–19 संक्रमण से बचाव एवं सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए ऑनलाईन संवेदीकरण		30
20	कोविड–19 संक्रमण से बचाव के उपाय एवं डूबने से होने वाली मृत्यु की रोकथाम के लिए ऑनलाईन संवेदीकरण		31
21	जीविका दीदियों एवं पदाधिकारियों का कोविड–19 संक्रमण एवं अगलगी से बचाव के लिए संवेदीकरण		32
22	पंचायती राज कर्मियों का संवेदीकरण		32
23	Disaster Risk Reduction & Resilience in Cities विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण		34
24	स्लम टास्क फोर्स के सदस्यों का प्रशिक्षण		34
25	बिहार राज्य आपदा संसाधन नेटर्वक (BSDRN) की समीक्षा		34
26	खबरें तस्वीरों में		35

विकास ऐसा हो जो आफत से बचाए,
ऐसा न हो जो कि आफत बल जाए।

संरक्षक मंडल

डॉ. उदय कान्त मिश्र, भा. अभि. से. (से.नि.)
उपाध्यक्ष, बि.रा.आ. प्र..प्राधिकरण

पी. एन. राय, भा. पु.से.(से.नि.)
सदस्य, बि.रा.आ. प्र..प्राधिकरण

मनीष कुमार वर्मा भा.प्र.से. (से.नि.)
सदस्य, बि.रा.आ. प्र..प्राधिकरण

मीनेन्द्र कुमार, बि.प्र.से.
सचिव, बि.रा.आ. प्र..प्राधिकरण

मुख्य संपादक: शशि भूषण तिवारी
उपाध्यक्ष के विशेष कार्य पदाधिकारी

वरीय संपादक: कुलभूषण कुमार गोपाल

संपादक मंडल

नीरज कुमार सिंह, सीनियर कंसल्टेंट
दिलीप कुमार, वरीय सलाहकार (मानव संसाधन एवं क्षमतावर्द्धन)
डॉ. जीवन कुमार, परियोजना पदाधिकरी
अशोक कुमार शर्मा, परियोजना पदाधिकारी
प्रवीण कुमार, परियोजना पदाधिकारी
जयंत रौशन, परियोजना पदाधिकारी
आई.टी: सुश्री सुम्बुल अफरोज
मनोज कुमार
ई-मेल: sr.editor@bsdma.org
वेबसाईट: www.bsdma.org
सोशल मिडिया : www.facebook.com/bsdma

नोट: पुनर्नवा में प्रकाशित आलेख लेखकों के व्यक्तिगत एवं अध्ययन स्वरूप विचार हैं। लेखन द्वारा व्यक्त विचारों के लिए बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण उत्तरदायी नहीं है।

आपदा नहीं हो भारी,
यदि पूरी हो तैयारी।

संपादकीय

तीन साल के अंतराल पर आयोजित बिहार दिवस का आयोजन आपदा प्रबंधन जागरूकता के लिए यादगार दिवस के रूप में सम्पन्न हुआ। इस अवसर का उपयोग विभिन्न आपदाओं से निपटने के लिए जागरूकता के उद्देश्य से किया गया। इस दौरान प्राधिकरण के हितभागियों ने आगंतुकों को आपदाओं से निपटने के लिए भरपुर जानकारी दी। प्राधिकरण के पेवेलियन में आने वाले लोगों को आपदा प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराया गया। इसके लिए नुक्कड़ नाटक, मुक–बधिर बच्चों के नाटक, विभिन्न स्टॉलों पर आपदा से बचाव की जानकारी की सामग्री वितरण आदि कार्यक्रम ने इस आयोजन को यादगार बना दिया। तीन दिवसीय बिहार दिवस के इस आयोजन में कार्यक्रमों का सिलसिला तीनों दिन तक अनवरत जारी रहा। माध्यम चाहे मूक–बधिर बच्चों के नाटक हों अथवा ड्रम बजाती महिलाओं का दल हो, या फिर भर दिन मंचित दर्जन भर नुक्कड़ नाटक हो, लोगों के लिए आपदा प्रबंधन प्राधिकरण का पेवेलियन महत्वपूर्ण बन गया। इन्हीं कारणों से इस आयोजन में सर्वाधिक लोगों की पसंद आपदा प्रबंधन प्राधिकरण का पेवेलियन बन गया था। एन0डी0आर0एफ0, एस0डी0आर0एफ0, सिविल डिफेंस समेत सभी 36 स्टॉलों पर भी आम लोगों की भीड़ लगातार बनी रही।

इस आयोजन की सफलता इससे भी जाहिर होती है कि तीन दिन के इस आयोजन में लगभग 50 हजार लोगों ने पेवेलियन के सभी 36 स्टॉलों का भ्रमण किया। सभी स्टॉलों पर मौखिक, ऑडियो, विडियो संदेश के साथ लोगों को आपदाओं से बचाव संबंधी पर्याप्त संख्या में आईईसी मैटेरियल उपलब्ध कराये गये।

बहार दिवस आयोजन के पहले दिन पद्म श्री सुधा वर्गीज के द्वारा पेवेलियन के उद्घाटन और माननीय मुख्यमंत्री का प्राधिकरण पेवेलियन का भ्रमण करना, माननीय मुख्यमंत्री के भ्रमण में मा0 मंत्री, श्री विजय कुमार चौधरी, मा0 भवन निर्माण मंत्री, श्री अशोक कुमार चौधरी समेत मुख्य सचिव श्री अमिर सुबहानी, अपर मुख्य सचिव श्री संजय कुमार, आपदा प्रबंधन विभाग के सचिव श्री संजय कुमार अग्रवाल आदि प्राधिकरण का पेवेलियन का अवलोकन करना प्राधिकरण के लिए उपलब्धि से कम नहीं था। प्राधिकरण के पेवेलियन का मा0 परिवहन मंत्री श्रीमती शीला कुमारी, राज्य विश्वविद्यालय सेवा आयोग के अध्यक्ष डॉ राजवर्द्धन आजाद समेत बड़ी संख्या में उच्चाधिकारियों द्वारा अवलोकन किया गया। बिहार दिवस के अंतिम दिन मा0 उपमुख्यमंत्री –सह– मंत्री, आपदा प्रबंधन विभाग श्रीमती रेणु देवी के द्वारा समापन समारोह को संबोधित किया गया। पेवेलियन के पहले स्टॉल 'रेडक्रॉस' हो या अंतिम स्टॉल 'उत्कर्ष एक पहल' हो, सभी स्टॉलों पर हितभागियों के अथक प्रयास की वजह से ही यह उपयोगी और सफल आयोजन संभव हो सका। पूरे कार्यक्रम की सफलता का श्रेय माननीय उपाध्यक्ष डा उदय कांत मिश्र, माननीय सदस्य श्री पी एन राय एवं श्री मनीष कुमार वर्मा के कुशल नेतृत्व व प्राधिकरण के सभी पदाधिकरी–कर्मचारी की टीम भावना से कार्य करने से ही संभव हो सका।

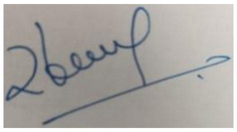

(शशि भूषण तिवारी)
मुख्य संपादक

"इनसे मिलिए" कार्यक्रम

अतिथि : श्रीमती नीलम चौधरी, भा0प्र0से0

अपनी जिंदगी में कला को किसी भी रूप में अवश्य शामिल करें: नीलम

"इनसे मिलिए कार्यक्रम" की कड़ी में 27.04.2022 को चर्चित कत्थक नृत्यांगना और भा0प्र0से0 के अधिकारी श्रीमती नीलम चौधरी अतिथि थीं। उन्होंने बच्चों के परवरिश में कला के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि संगीत जीवन को सफल बनाता है। अपने जीवन में कला और संगीत की भूमिका की जानकारी देते हुए उन्होंने कहा कि आज तक एक भी कलाप्रेमी अपराधी नहीं देखे गये हैं, जबकि गैर कला के क्षेत्र वाले कई सफल व्यक्ति भी अपराध में लिप्त पाये गये हैं। अपने संबोधन में श्रीमती चौधरी ने कहा कि संगीत/नृत्य की वजह से वे अपने जीवन के हर क्षेत्र में सफल हुई हैं। उनके सभी भाई, बहन, पुत्र, पुत्री एवं परिवार के अन्य सभी सदस्य जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में बड़ी सफलता प्राप्त की है। अपने प्रशासनिक जीवन की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा महिला होने के कारण कई बार हमें साबित करना पड़ता है कि मैं भी सफलता पूर्वक कोई भी काम कर सकती हूँ। यह तकलीफदेह होता है। उन्होंने कहा महिलाओं को पुरूष से अधिक काम करना पड़ता है। महिला को प्रकृति का सबसे बेहतरीन कृति बताते हुए कहा कि अगले जन्म में भी मैं महिला के रूप में जन्म लेना चाहूंगी। अपने नृत्य जीवन की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा डांस करते समय प्राईड की फिलिंग होती है। उन्होनें सभी से अनुरोध किया कि अपनी जिंदगी में कला को किसी न किसी रूप में अवश्य शामिल करें। यह जीवन को सुंदर बनाता है। जीवन में संगीत के योगदान की जानकारी देते हुए कहा कि महान वैज्ञानिक आईंस्टीन समेत अनेकों महान व्यक्ति का संगीत का गहरा लगाव था। अपने सुझाव में उन्होंने कहा कि अपने बच्चों को पैंटिंग/म्युजिक से अवश्य जोड़ें, इससे पोजिटीव व्यक्तित्व उभरता है। संगीत की वैज्ञानिक पहलुओं पर चर्चा करते हुए बताया कि लय–ताल और सुर के विभिन्न तरंगों से शरीर बनता है। इसलिए जीवन के लिए कला और संगीत महत्वपूर्ण है। श्रोताओं के प्रश्नों के जवाब में उन्होंने बताया कि म्युजिक सुनते पढ़ाई करना कहीं से गलत नहीं है। उन्होंने अपने बच्चों को ऐसा करने से कभी नहीं रोका। उनके सभी बच्चे संगीत सुनते पढ़ाई कर बेहतर परिणाम प्राप्त किये हैं।

मॉनसूनः—एक परिचय

आनंद शंकर एवं आशीष कुमार, मौसम वैज्ञानिक, भारत मौसम विज्ञान विभाग, पटना

मॉनसून हमारे देश के लिए एक उल्लेखनीय घटना है, क्योंकि मॉनसून अपने साथ सिर्फ बारिश ही नहीं लाती है बल्कि पूरे ऋतु चक्र को भी प्रभावित करने की क्षमता रखती है। यद्यपि ऋतुराज वसंत को कहा जाता है, जबकि असलियत में मॉनसून ही ऋतु चक्र की धूरी है।

ऐसा होता है मॉनसूनः—

विज्ञान की नजर में मॉनसून एक मौसमी जलवायवीय परिघटना है। ये विशाल समुद्री जल एवं स्थल की भिन्न—भिन्न विकिरण सोखने की क्षमता, समुद्र से स्थल की ओर हवा चलने के कारण उत्पन्न होती है। भारतीय प्रायद्वीप में शीत ऋतु के बाद सूरज की गर्मी के कारण स्थल भाग बहुत गर्म हो जाता है, जबकि हिन्द महासागर का पानी अपेक्षाकृत ठंडा रहता है। भारतीय प्रायद्वीप के पूरे भू—भाग में हवाएं गरम होकर ऊपर उठती हैं जिसके कारण गंगा, यमुना के मैदान से लेकर मध्य पश्चिमी और दक्षिणी भारत में निम्न दबाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इसके साथ ही अरब सागर और बंगाल की खाड़ी में उच्च दबाव की स्थिति से उत्पन्न होने वाली शीतल समुद्री हवाएं अपेक्षाकृत अधिक दबाव तथा तापमान के अंतर के कारण जमीन की तरफ बढ़ती हैं। ये हवाएं अपने साथ भारी नमी लिए हुए हिमालय की ओर चल पड़ती हैं एवं उत्तर में हिमालय पर्वत और पश्चिम में सहयाद्री पर्वत से टकराकर ऊपर उठती है और संघनन के कारण वर्षा होती है।

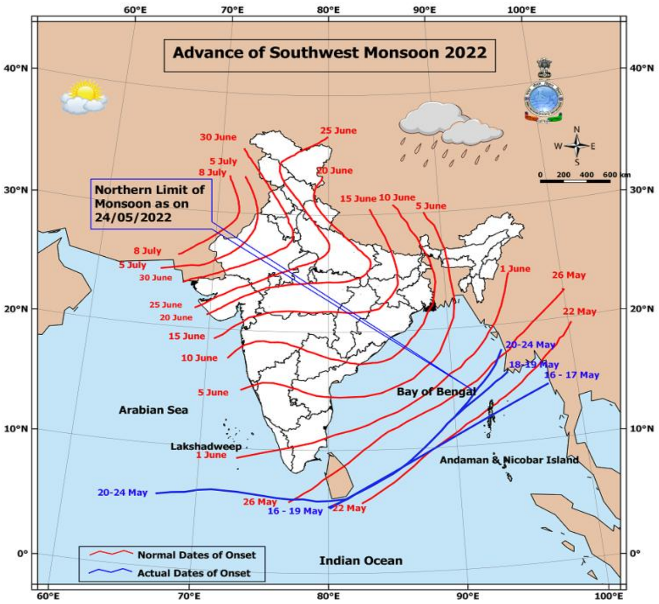

चित्र 1. भारतीय उपमहाद्वीप कि स्थिति (मॉनसून क लिए उपयुक्त)

भारत के परिपेक्ष्य में मॉनसून का महत्व :–

- भारत की 2 ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था, जो मुख्यतः कृषि पर निर्भर है जिसके लिए मॉनसून का विशेष महत्व है।

- भारत के कुल फसल का दो–तिहाई भागों पर पानी की आपूर्ति मॉनसून की बारिश से ही पूरी हो जाती है।

- दक्षिण–पश्चिम मॉनसून दो शाखाओं में आता है जिन्हें बंगाल की खाड़ी शाखा और अरब सागर शाखा कहा जाता है। मॉनसून की दोनों शाखाएं थार रेगिस्तान के ऊपर बनी हुई कम दबाव का क्षेत्र के कारण संचरित होती है। अरब सागर शाखा का मॉनसून प्रवाह, बंगाल की खाड़ी शाखा की तुलना में प्रायः अधिक मजबूत है।

- भारत की जलवायु पर दो प्रकार की मौसमी हवाओं का प्रभाव पड़ता है; पूर्वोत्तर मॉनसून (अक्टूबर से दिसंबर) और दक्षिण पश्चिमी मॉनसून (जून से सितंबर) जिसके फलस्वरूप भारत की जलवायु आमतौर पर उष्ण कटिबंधीय है।

- दक्षिण पश्चिम मॉनसून पहले केरल के तट पर सामान्यतः 1st जून तक पहुँचती है और फिर 10th और 13th जून के बीच मुंबई और कोलकाता पहुंचने के लिए तेजी से आगे बढ़ती है। इसके अलावा जुलाई के मध्य तक, दक्षिण पश्चिम मॉनसून पूरे उपमहाद्वीप को घेर लेती है।

बिहार के परिपेक्ष्य में मॉनसून का महत्वः–

- वर्षा ऋतु (मानसून) जून के मध्य में शुरू होती है और सितंबर के अंत या अक्टूबर की शुरुआत तक जारी रहती है।

- बिहार में मॉनसून का आगमन बंगाल की खाड़ी की मॉनसून शाखा से होती है। मॉनसून की शुरुआत राज्य के पूर्वी क्षेत्र से होती है और दक्षिण–पश्चिम मॉनसून का राज्य की कृषि अर्थव्यवस्था के लिए अपार खुशियां लेकर आती हैं।

- मॉनसून विशेष कर शुष्क दक्षिणी बिहार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि वे पारंपरिक रूप से शुष्क क्षेत्रों को अधिक वर्षा के माध्यम से नमी प्रदान करने में मदद करते हैं। सूखे वाले स्थान अपनी कृषि को लाभान्वित करने, पानी की आपूर्ति को फिर से भरने और अपनी स्थानीय अर्थव्यवस्था को समृद्ध रखने के लिए मॉनसून पर भरोसा करते हैं।
- भारत की तरह कुल वार्षिक वर्षा का लगभग 85% वर्षा दक्षिण पश्चिम मॉनसून (जून, जुलाई, अगस्त और सितंबर) में होती है

क्रम स	बर्ष	मॉनसून वर्षा (मिली मीटर में)	वार्षिक वर्षा (मिली मीटर में)	प्रतिशत मॉनसून वर्षा कुल वार्षिक वर्षा का
1	2015	744.7	872.5	85.4
2	2016	993.9	1158	85.8
3	2017	936.8	1111.7	84.3
4	2018	770.8	863.6	89.3
5	2019	1050.3	1196.9	87.8
6	2020	1272.5	1538.5	82.7
7	2021	1044.5	1553.7	67.2

तालिका 1. बिहार राज्य के मॉनसून तथा वार्षिक वर्षा का विवरण

मॉनसून 2021 (जून, जुलाई ,अगस्त और सितंबर) का जिलावार वर्षापात की स्थिति

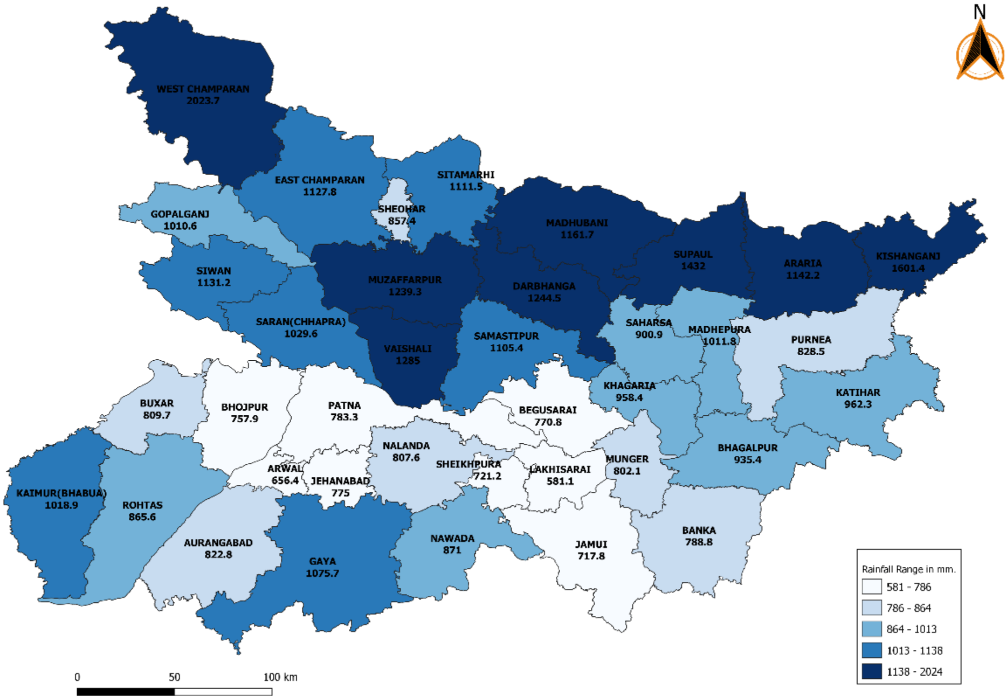

चित्र 2. बिहार के जिलावार मॉनसून वर्षा की स्थिति (मॉनसून 2021)

मॉनसून का पूर्वानुमानः–

भारत में 1876–1878 के अकाल के बाद से ही मॉनसून की वर्षा की भविष्यवाणी करने के लिए विभिन्न प्रयास किए गए हैं। भारत मौसम विभाग द्वारा वर्ष 1884 से भारत के लिए मॉनसून वर्षा की भविष्यवाणी की जा रही है। मॉनसून का दीर्घ अवधि पूर्वानुमान विभिन्न कारकों पर निर्भर करता है। सामान्य तौर पर तीन प्रकार के पूर्वानुमान तकनीकों का उपयोग किया जाता है –

(i) सांख्यिकीय विधि (ii) संख्यात्मक मौसम भविष्यवाणी या डाइनैमिक विधि (iii) डाइनैमिक सह सांख्यिकीय विधि। इन तकनीकों पर आधारित अभी कम से कम पांच दीर्घावधि पूर्वानुमान मॉडल काम कर रहे हैं। भारत मौसम विज्ञान विभाग भारत के लिए मॉनसून दीर्घावधि पूर्वानुमान जारी करने के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार है।

भू-जल दोहन भयावह हालात में

पंकज मालवीय, जल एवं पर्यावरण विशेषज्ञ

हिंदू माइथोलॉजी में सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा के कमंडल का जल, जगतपालक विष्णु का महासागर में शयन करना और संहारक शिव के जटाजूट से गंगा का प्रवाहित होना स्वयं में जल-दर्शन का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। ऐसी परंपरा और मान्यता के बावजूद आज हमारा भविष्य जल संकट में है। बढ़ती जनसंख्या, औद्योगीकरण और भारी मांग के चलते भू-जल दोहन भयावह हालत में पहुंचता जा रहा है। उपलब्ध जानकारी के मुताबिक हमारे देश में योजना पूर्व यानी वर्ष 1951 के दौरान प्रति व्यक्ति वार्षिक उपलब्ध जल संसाधन लगभग 5200 घन मीटर था। वर्ष 1990 के बाद यह बढ़ती आबादी, शहरीकरण, औद्योगिकीकरण आदि के कारण घटकर मात्र 2200 घन मीटर रह गया, जो एक गंभीर स्थिति की ओर संकेत करता है। सन् 2050 की सम्भावित 180 करोड़ से अधिक की जनसंख्या को देखते हुए उस वक्त प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता 1000 क्यूबिक मीटर हो जायेगी, जो कि 2001 में प्रति व्यक्ति 1800 क्यूबिक मीटर थी। कहा जा रहा है कि कहीं सन् 2050 तक शायद पानी एक दुर्लभ वस्तु न बन जाये, स्थिति अत्यंत चिंताजनक और भयावह है।

इसका प्रमुख कारण ग्राउंड वाटर का रिचार्ज न होना ही है। ग्राउंड वाटर रिचार्ज वनस्पतियों और वृक्षों द्वारा होता है, लेकिन अब इनकी संख्या में लगातार कमी आती जा रही है। इसके अलावा भू-जल रिचार्ज के सबसे बड़े संसाधन थे, हमारे तालाब, पोखर, ताल–तलैया, नदियां। समाज पीने के पानी तथा सिंचाई के लिए ट्यूबवेल, पंपसेट, हैंड पंप आदि पर जोर देती है, परंतु परम्परागत जलस्रोतों का महत्व नहीं समझ रही है। हम केवल पानी लेना जानते हैं, लेकिन भू-जल स्रोत नष्ट होते जा रहे हैं, इस ओर किसी का ध्यान नही है। धरती से जल के दोहन के बदले कितना जल वापस धरती में जाना चाहिए, इस संबंध में दुनिया भर के वैज्ञानिकों में आम राय यह है कि साल भर में होने वाली कुल बारिश का कम से कम 31 प्रतिशत पानी धरती के भीतर रिचार्ज के लिए जाना चाहिए, तभी जल स्रोतों से लगातार पानी मिल सकेगा। एक शोध के मुताबिक, वर्तमान मे कुल बारिश का औसतन 13 प्रतिशत पानी ही धरती के भीतर जमा हो रहा है। धरती के भीतर पानी जमा न होने के कारण एक ओर जलस्रोत सूख रहे हैं, तो दूसरी ओर बरसात में मैदानी इलाकों में बाढ़ की समस्या विकट होती जा रही है। शहरी क्षेत्र में तो रिचार्ज की स्थिति और भी चिंताजनक है। सड़कें, भवन आदि अन्य निर्माण कार्यों के कारण शहरी इलाकों में बारिश का तीन प्रतिशत पानी ही धरती के भीतर जमा हो पाता है।

विशेषज्ञों का मानना है कि जल संकट ही आने वाले समय की चुनौती होगी, जिस पर गौर करना आज की सबसे बडी जरूरत है। वरना स्थिति इतनी भयावह होगी कि उसका मुकाबला कर पाना असंभव होगा। बिहार की परिस्थिति पर गौर करने पर हम समझ सकते हैं कि पानी—पानी होने के बावजूद राज्य बेहाल होने की राह पर है। दरअसल हम पानी के महत्व को समझ नहीं रहे हैं और उनके प्रबन्धन को लेकर गम्भीर भी नही होना चाहते हैं। आर्थिक विकास, सिंचित कृषि में बढ़ोतरी और बढ़ती आबादी के चलते पानी की मांग बढ़ रही है। भूमिगत जल से ग्रामीण भारत में पेयजल की 85 फीसदी, औद्योगिक क्षेत्र की 50 फीसदी और सिंचाई की 55 फीसदी जरूरतें पूरी होती हैं। भू—जल के बढ़ते इस्तेमाल की वजह से देश के कई हिस्सों में जल—स्तर और इसकी गुणवत्ता में कमी आई है। ऐसे में पानी के स्रोतों को लेकर समाज एक बार फिर से जागृत हो जाए, तो भविष्य मे होने वाले पानी की कमी दूर करने के साथ इन पर निर्भर समाज के रोजी-रोटी का संकट भी दूर होने की सम्भावना से इंकार नहीं किया जा सकता है। ऐसे मे इस मुद्दे को लेकर एक गम्भीर अध्ययन और विमर्श शुरू करने की जरूरत है।

बिहार के कई जिलों में भूमिगत जल स्तर की स्थिति पिछले 30 सालों में चिंताजनक हो गई है। कुछ जिलों में भू—जल स्तर दो से तीन मीटर तक गिर गया है। एक ताजा अध्ययन के अनुसार, भू—जल में इस गिरावट का मुख्य कारण झाड़ीदार वनस्पति क्षेत्रों एवं जल निकाय क्षेत्रों का तेजी से सिमटना है। आबादी में बढ़ोत्तरी और कृषि क्षेत्र में विस्तार के कारण भी भू—जल की मांग बढ़ी है। कानपुर स्थित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) और काठमांडू स्थित इंटरनेशनल सेंटर फॉर इंटिग्रेटेड माउंटेन डेवेलपमेंट के शोधकर्ताओं द्वारा उत्तर बिहार के 16 जिलों में किए गए इस अध्ययन के अनुसार, जल निकाय सिमटने के कारण प्राकृतिक रूप से होने वाला भूमिगत जल का रिचार्ज भी कम हुआ है। शोधकर्ताओं के अनुसार, बेगूसराय, भागलपुर, समस्तीपुर, कटिहार और पूर्णिया जैसे जिलों के भूमिगत जल स्तर में 2.3 मीटर की गिरावट दर्ज की गई है। भू—जल में गिरावट से समस्तीपुर, बेगूसराय और खगड़िया सबसे अधिक प्रभावित हुए हैं। इन जिलों के भू—जल भंडार में तीस वर्षों के दौरान क्रमशः 57.7 करोड़ घन मीटर, 39.5 करोड़ घन मीटर और 38.5 करोड़ घन मीटर गिरावट दर्ज की गई है। मानसून से पहले और उसके बाद के महीनों में भू—जल भंडार के मामले में इसी तरह का चलन समस्तीपुर, कटिहार और पूर्णिया जिलों में देखने को मिला है। मानसून से पूर्व भू—जल भंडार में सबसे अधिक गिरावट 63.6 करोड़ घन मीटर और 63.1 करोड़ घन मीटर दर्ज की गई है। वहीं, मानसून के बाद भू—जल भंडार में सबसे अधिक गिरावट 28.9 करोड़ घन मीटर और 21.6 करोड़ घन मीटर दर्ज की गई है।

कृषि उत्पादन में वृद्धि के लिए अत्यधिक जोर देने और भू–जल प्रबंधन के लिए चिंता नहीं होने के कारण वहां ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई है। बिहार के उत्तरी क्षेत्र में भू–जल तेजी से गिर रहा है और भविष्य में बदलती सामाजिक–आर्थिक स्थितियों के साथ जल के दोहन को बढ़ावा मिलने की संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता है। इस अध्ययन में भू–जल भंडार, भूमि उपयोग एवं भू–आवरण संबंधी तीस वर्षों के आंकड़े (1983–2013) उपयोग किए गए हैं। भू–जल संबंधी आंकड़े केंद्रीय भूमि जल बोर्ड और राज्य भूमि जल बोर्ड से लिए गए हैं। वहीं भूमि उपयोग और भू-आवरण संबंधी आंकड़े हैदराबाद स्थित नेशनल रिमोट सेंसिंग सेंटर से प्राप्त किए गए हैं। शोधकर्ताओं ने पाया है कि इस दौरान एक ओर कृषि क्षेत्र के दायरे में 928 वर्ग किलोमीटर की बढ़ोत्तरी हुई है तो दूसरी ओर जल निकायों का क्षेत्र 2029 वर्ग किलोमीटर से सिमटकर 1539 वर्ग किलोमीटर रह गया है। इसी के साथ झाड़ीदार वनस्पतियों के क्षेत्रफल में भी इस दौरान 435 वर्ग किलोमीटर की गिरावट दर्ज की गई है।

इंडिया साइंस वायर के अनुसार, यह अध्ययन महत्वपूर्ण है क्योंकि उत्तरी बिहार को दूसरी हरित क्रांति के संभावित क्षेत्र के रूप में देखा जा रहा है। इस तरह की कोई भी पहल करते वक्त भू–जल के टिकाऊ प्रबंधन से जुड़ी योजनाओं को ध्यान में रखना होगा ताकि भविष्य में गंभीर जल संकट से बचा जा सके। हरित क्रांति के कारण पंजाब जैसे राज्यों में भूमिगत जल के अत्यधिक दोहन को बढ़ावा मिला है और यह क्षेत्र अब दुनिया के सर्वाधिक भू–जल दोहन वाले इलाकों में शुमार किया जाता है। कृषि उत्पादन में वृद्धि के लिए अत्यधिक जोर देने और भू–जल प्रबंधन के लिए चिंता नहीं होने के कारण वहां ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई है। बिहार के उत्तरी क्षेत्र में भू–जल तेजी से गिर रहा है और भविष्य में बदलती सामाजिक–आर्थिक स्थितियों के साथ जल के दोहन को बढ़ावा मिलने की संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता है।

भू–जल के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए कानूनी प्रावधानों को सख्ती से लागू करने की जरूरत

वर्तमान में हालात यह है कि पिछले एक दशक में हुई अंधाधुंध बोरिंग से भू-जल स्तर तबाह हो गया है, लेकिन समाज को इसकी परवाह नहीं, शायद उन्हें स्थिति के विस्फोटक होने का इंतजार है। शहर के गली, मोहल्ले में रोजाना लाखों गैलन पानी बोरिंग और अन्य स्रोतों के जरिए निकालकर बेचा जा रहा है। अवैध रूप से पानी बेचकर पानी माफिया करोड़ों रुपए कमा रहे हैं।

शहरों में देखते ही देखते पुराने घरों को ध्वस्त कर बहुमंजली इमारतों, अपार्टमेंट, मार्केटिंग कांप्लेक्स आदि बड़ी संख्या में निर्माण हुए और पानी के लिए डीप बोरिंग कराई गईं, लेकिन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम नहीं लगाया गया। भू–जल संरक्षण के लिए राज्य में Rain Water harvesting को प्रोत्सहित करने और दो मंजिला से अधिक ऊंचे भवन या कमर्शियल भवन में इसकी व्यवस्था अनिवार्य करने की जरूरत है। उन्हें हर हाल में रिचार्ज पिट लगाना चाहिए।

धरती के अंदर से कौन कंपनी कितना पानी निकाल रही है, इसे मापने का कोई पैमाना नहीं है। इसका फायदा कंपनियां उठा रही हैं। कई कंपनियां तो बिना किसी वाटर मीटर के डीप बोरिंग के माध्यम से पानी निकाल रही हैं। घर–घर में जल का दोहन करने वालों पर भी कोई नकेल नहीं कसी जा रही है लेकिन भूजल के स्तर को बनाए रखने की चिंता उनमें नहीं दिखती है। वहां भू–जल रिचार्ज करने के उपाय को अनिवार्य करना होगा।

भू–जल स्तर को लेकर जागरूकता के अभाव में बारिश का पानी ठहरता ही नहीं है। सारा पानी नदी, नालों के रास्ते यूं ही बह जाता है। सबसे बुरी स्थिति मध्य बिहार सहित अन्य शहरी क्षेत्रों की है। वर्षा जल के भंडारण की उचित व्यवस्था नहीं होने के कारण 80 फीसदी पानी बेकार बह जाता है।

भू-गर्भ जल के अतिदोहन की वजह से भू–गर्भ जलस्तर करीब 10-12 मीटर तक नीचे चला गया है। पिछले दो वर्ष में छह मीटर तक की गिरावट का अनुमान है। अगर भू–गर्भ जल का भंडारण नहीं होगा और इसी तरह से भू–गर्भ जल का दोहन जारी रहा, तो कुछ वर्षों के बाद पीने का पानी भी नहीं मिलेगा। पूर्व में भू–गर्भ जल संरक्षण कानून में शहरी क्षेत्र को ही फोकस किया गया है। कृषि क्षेत्र में इसके लिए कोई नियम नहीं बनाया गया, जबकि भू–जल की बर्बादी सबसे ज्यादा वहीं होती है। सिंचाई के तरीके में बदलाव की जरूरत है ताकि पानी की बर्बादी नहीं हो।

भू–जल रिचार्ज का सबसे बड़ा साधन तालाब और अन्य परंपरागत जल संसाधन होते हैं। इनके संरक्षण को लेकर सरकार और समाज को जागरूक करने की जरूरत है। इनको संरक्षित रखने के लिए बने कानूनों को लागू करने की जरूरत है।

बिहार दिवस : प्राधिकरण के पेवेलियन में मिली आपदा से सुरक्षा की महत्वपूर्ण जानकारियां
50 हजार लोगों ने प्राधिकरण के पेवेलियन का किया भ्रमण

बिहार दिवस 22–24 मार्च, 2022 के अवसर पर गांधी मैदान में मुख्य कार्यक्रम का आयोजन हुआ। तीन साल बाद आयोजित बिहार दिवस के पहले दिन यानी 22 मार्च, 2022 को सुबह 10 बजे चर्चित समाज सेविका पद्म श्री सुधा वर्गीज ने प्राधिकरण के पेवेलियन का उद्घाटन किया। इस उद्घाटन समारोह में बड़ी संख्या में वंचित समुदाय के बच्चियों द्वारा पुष्प वर्षा करना लोगों के लिए आकर्षण बन गया। बिहार दिवस जैसे महत्वपूर्ण आयोजन में इन बच्चियों का भाग लेना भी इनके लिए उत्साहवर्धन से कम नहीं था। इस अवसर पर प्राधिकरण के माननीय उपाध्यक्ष डा उदय कांत मिश्र, माननीय सदस्य श्री पी0 एन0 राय और माननीय सदस्य श्री मनीष कुमार वर्मा एवं सचिव श्री मीनेंद्र कुमार समेत प्राधिकरण परिवार के अनेक अधिकारी और कर्मचारी मौजूद थे। सुश्री वर्गीज द्वारा पेवेलियन का उद्घाटन होते हीं लोगों की भीड़ प्राधिकरण के पेवेलियन की ओर चल पड़ी। यह जन समुदाय प्राधिकरण के पेवेलियन के सभी 36 स्टॉलों की ओर आकर्षित हुए जहां एनडीआरएफ, एसडीआरएफ, रेडक्रॉस, सिविल डिफेंस, यूनीसेफ, केरिटास, युगांतर, भेटनरी कॉलेज, पटना, उत्कर्ष एक पहल, डाक्टर्स फॉर यू समेत अन्य हिततभागियों के स्टॉल आपदा से बचाव के लिए विभिन्न प्रकार की जानकारी दी गयी। जनसमुदाय को आपदा प्रबंधन की जानकारी के साथ बचाव से संबंधित विभिन्न प्रकार के आई.ई.सी मेटेरियल उपलब्ध कराए गये।

तीन दिनों तक आयोजित इस बिहार दिवस के में प्राधिकरण के पेवेलियन में लगभग 50 हजार लोगों ने भ्रमण कर आपदा प्रबंधन के विभिन्न आयामों की जानकारी ली एवं प्राधिकरण के हितभागियों द्वारा आपदा से बचाव से संबंधित सामग्री प्राप्त किये। वहीं, दूसरे दिन माननीय परिवहन मंत्री शीला कुमारी और राज्य विश्वविद्यालय सेवा आयोग के अध्यक्ष डॉ0 राजवर्धन आजाद ने प्राधिकरण के पेवेलियन का भ्रमण कर आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में हो रहे कामकाज की जानकारी ली।

माननीय मुख्यमंत्री ने किया प्राधिकरण के पेवेलियन का भ्रमण

बिहार दिवस के पहले दिन यानी 22 मार्च 2022 को माननीय मुख्यमंत्री सह अध्यक्ष, आपदा प्रबंधन प्राधिकरण श्री नीतीश कुमार ने प्राधिकरण पेवेलियन का भ्रमण किया। इस दौरान उन्होंने रेडक्रॉस समेत कई स्टॉलों में जाकर आपदा प्रबंधन के लिए राज्य में हितभागियों द्वारा किये जा रहे कार्यों की जानकारी ली। माननीय मुख्यमंत्री द्वारा प्राधिकरण पेवेलियन में भ्रमण के दौरान माननीय शिक्षा मंत्री, श्री विजय कुमार चौधरी, माननीय भवन निर्माण मंत्री, श्री अशोक कुमार चौधरी, माननीय उपाध्यक्ष डा उदय कांत मिश्र, माननीय सदस्य श्री पी0 एन0 राय, माननीय सदस्य श्री मनीष कुमार वर्मा, मुख्य सचिव श्री अमीर सुबहानी, शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव श्री संजय कुमार, आपदा प्रबंधन विभाग के सचिव श्री संजय कुमार अग्रवाल समेत कई अन्य विभागों के उच्चाधिकारी मौजूद थे।

नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से आपदा प्रबंधन की दी गयी जानकारी

बिहार दिवस के अवसर पर तीनों दिन लगातार नुक्कड़ नाटकों के मंचन का दौर चला। मंचन के माध्यम से लोगों को आपदा प्रबंधन की जानकारी दी गई। आकर्षक मंचन और कर्णप्रिय संगीतों की वजह से आमलोगों को आकर्षित करने में नाट्य मंडली सफल रहे। यही वजह थी कि नाटक, पेवेलियन के अंदर हो अथवा प्राधिकरण पेवेलियन के बाहर हो, दर्शकों की भीड़ हर जगह जमी रही। कलाकारों ने भी इस अवसर को आपदा से निपटने की जानकारी देने के लिए भरपुर रूप से उपयोग किया। उन्होंने अपदा प्रबंधन पर आधारित नाटकों के मंचन से लोगों को अपादाओं में सावधानी बरतने, आपदा पूर्व तैयारी करने, बचाव के उपाय और अन्य जानकारी दिये गये। नुक्कड़ नाटक का आकर्षण ही था कि गांधी मैदान में जहां–तहां बैठे लोग भी नुक्कड़ नाटक की गुंज के साथ ही आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के पेवेलियन की ओर चले आते थे। कलाकारों के द्वारा तीनों दिन पेवेलियन और पेवेलियन के बाहर प्रतिदिन एक दर्जन से अधिक नुक्कड़ नाटकों का मंचन किया गया। नुक्कड़ नाटक करने वाले टीमों में निर्माण कला मंच, प्रेरणा, आपसदारी कला मंच, दोस्ताना सफर, प्रहरी, सर्वमंगला सांस्कृतिक मंच समेत अन्य टीम शामिल थे।

विशेष आकर्षण का केंद्र बना रहा मूक-बधिर बच्चों के नाटक

बिहार दिवस के अवसर पर जेएम इन्स्टीच्यूट, पटना के मूक–बधिर बच्चों के नाटक सभी के लिए आकर्षण का केंद्र बन गया था। दो दर्जन से अधिक ऐसे बच्चे जो बोलने और सुनने में पूरी तरह अक्षम थे, ने अपने अद्‌भुत अभिनय से अपने और अपनो को आपदा से कैसे बचायें का संदेश दिया। लगातार तीन दिनों तक चले नाटय मंचन में इनके प्रदर्शन को खुब सराहा गया। बच्चे की प्रस्तुती ऐसी थी कि मानो दर्शकों को आपदा से बचाव के लिए उनसे सीधी वार्ता चल रही हो। इन बच्चों द्वारा भी नाटय मंचन और लोगों की सराहना के भाव को समझ रोमांचित हो रहे थे। शायद ऐसे बच्चों के लिए यह सार्वजनिक रूप से आयोजित पहला कार्यक्रम हो। ये बच्चे अपने साथियों और पहचान के लोगों को दोनों अंगुठा 'अप' कर दिखा रहे थे यानी वे अभिनय में सफल होने का संकेत दे रहे थे। इस नाटक के निर्देशक चर्चित नाट्‌यकर्मी श्रीमती नवनीत शर्मा और श्रीमती दिब्या शर्मा थीं। दोनों निर्देशकों के द्वारा कई दिनों के रिहर्सल के बाद यह सफल नाटय मंचन संभव हो हुआ।

माननीय उपमुख्यमंत्री -सह- आपदा प्रबंधन मंत्री ने समापन समारोह को संबोधित किया

कोरोना के दौरान प्राधिकरण ने किया बेहतरीन कामः मंत्री

बिहार दिवस के तीसरे और अंतिम दिन माननीय उपमुख्यमंत्री –सह– आपदा प्रबंधन मंत्री श्रीमती रेणु कुमारी ने समापन समारोह को संबोधित किया। इसके पूर्व उन्होंने जेंडर इक्विटी कमिटी और मूक–बधिर बच्चों के नाटक भी देखे। समापन समारोह को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि कोरोना जैसे आपदा के दौरान भी आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने बेहतरीन काम किया। आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में प्राधिकरण और आपदा प्रबंधन विभाग के कामकाज की प्रशंसा करते हुए उन्होंने प्राधिकरण और आपदा प्रबंधन विभाग के अधिकारियों–कर्मियों को बधाई देते हुए समारोह के समापन की विधिवत घोषणा की।

डूबने की घटनाओं एवं ठनका से बचाव के लिए चला जन-जागरूकता अभियान

बिहार दिवस के अवसर पर नदियों, तालाबों, गड्ढों में डूबने की घटनाओं की रोकथाम एवं ठनका से बचाव के उद्देश्य से डिमोन्सट्रेशन, परिचर्चा एवं प्रचार–प्रसार सामग्रियों का वितरण कर आमलोगों का संवेदीकरण किया गया। ठनका से बचने के लिए पूर्णिया के वॉलेंटियरों द्वारा प्रदर्शित जुगाड़ संसाधन को लोगों ने खुब सराहा। वहीं स्टॉल पर भ्रमण करने वाले महिलाओं, पुरूषों एवं बच्चों को खतरनाक घाटों के किनारों पर न जाने और न ही बच्चों को जाने देने, बच्चों को नदी/तालाबों/तेज पानी के बहाव में स्नान करने से रोकने आदि की जानकारी दी गई।

सड़क सुरक्षा-जीवन रक्षा विषय पर चला जागरूकता अभियान

बिहार दिवस के अवसर पर कम्युनिटी ट्रैफिक पुलिस के सहयोग से सड़क सुरक्षा हेतु आवश्यक यातायात चिन्हों एवं उपायों की जानकारी देने के उद्देश्य से पेवेलियन में ट्रैफिक पार्क बनाया गया। पार्क के अंदर सड़क दुघर्टनाओं के कारणों की जानकारी फ्लैक्स के माध्यम से प्रदर्शित किया गया था। इस पार्क के अंदर जेब्रा क्रॉसिंग, ट्रैफिक लाईट को दर्शाया गया था। ट्रैफिक पार्क में Driving Simulator, Air Craft Models का प्रदर्शन भी किया गया था। पार्क के अंदर स्वास्थ्य जाँच शिविर एवं AIIMS, Patna के द्वारा सड़क दुर्घटनाओं के दौरान घायल व्यक्तियों को प्राथमिक उपचार की विधियों का डिमोन्सट्रेशन भी किया गया। भूकम्परोधी भवनों के मॉडल तैयार कर पुराने/कमजोर भवनों का रेट्रोफिटिंग की जानकारी एवं इसका प्रदर्शन किया गया। बांस की आपदारोधी मकान कैसे बनाएं, शेक टेबल के माध्यम से भूकम्प के दौरान भवनों पर प्रभाव का प्रदर्शन, आपदा जोखिम न्यूनीकरण को समझाने हेतु टेबल गेम के माध्यम से लोगों में जागरूकता, जोखिम, संवेदनशीलता एवं क्षमता के पारस्परिक संबंधों की चर्चा की गई। पटना स्थित पोलिटेक्निक संस्थानों के छात्रों को भूकम्परोधी निर्माण एवं रेट्रोफिटिंग तकनीक की सुसंगत जानकारी दी गई।

अस्पताल अग्नि सुरक्षा से संबंधित मॉडलों का प्रदर्शन

दिनांक 22.03.2022 से 24.03.2022 तक आयोजित बिहार दिवस के उपलक्ष्य में लोगों को अग्नि सुरक्षा के प्रति जागरूकता करने के उद्देश्य से *'अस्पताल अग्नि सुरक्षा'* पर बने चार मॉडलों का प्रदर्शन किया गया। इन मॉडलों एवं पोस्टरों के माध्यम से आगन्तुकों को राज्य के अस्पतालों में अग्नि सुरक्षा संबंधी किये जा रहे कार्यों का विवरण दिया गया। अग्नि से सुरक्षित भवन की डिजाईन, अत्याधुनिक अग्निशमन यंत्रों का अधिष्ठापन एवं त्रिस्तरीय अग्नि सुरक्षा के उपायों पर भी प्रमुखता से चर्चा की गई। इन यंत्रों में फायर बॉल, फायर एक्सटिंग्यूशर, स्प्रींकलर, फायर स्मोक डिटेक्टर सिस्टम, धुँआ निकासी यंत्र, एलार्म सिस्टम, स्वचालित इमरजेंसी डोर आदि के बारे में लोगों को जानकारी दी गई। लोगों को अस्पताल/भवनों में इलेक्ट्रिक शॉर्ट शर्किट की संभावना को कम करने के लिए वायरिंग एवं इलेक्ट्रिक इक्यूपमेंट/अर्थिंग आदि को दुरूस्त करने की जानकारी दी गई, साथ ही त्रिस्तरीय सुरक्षा के उपायों से अवगत कराया गया।

इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में मॉडलों की सहायता से लगभग 4,000 लोगों से सीधे संवाद कर अस्पताल अग्नि सुरक्षा एवं आग न लगने देने के उपाय एवं इसे फैलने से रोकने के विभिन्न संयंत्रों के बारे में भी जानकारी दी गयी।

बिहार दिवस के हितभागी संगठनों और प्राधिकरण के 36 स्टॉल

बिहार दिवस के अवसर पर लगातार तीन दिनों तक प्राधिकरण के हितभागी संगठनों के द्वारा आपदा प्रबंधन से संबंधित जानकारी एवं जागरूकता अभियान चलाया गया। इन स्टॉलों पर आपदा से सुरक्षा की सटीक जानकारी मिलने के कारण तीनों दिन आम लोगों की भीड़ बनी रही।

स्टॉलों और संबंधित संस्थाओं द्वारा किए गए कार्यो का ब्यौरा

स्टॉल नं0	संस्थाएं	कार्य
1	रेडक्रॉस	स्वास्थ्य संबंधी जानकारी एवं परीक्षण
2	भूकम्परोधी भवनों के मॉडल 1, 2 और 3	भूकम्परोधी भवन निर्माण संबंधी जानकारी
3	भूकम्परोधी भवनों के मॉडल 1, 2 और 3	भूकम्परोधी भवन निर्माण संबंधी जानकारी
4	भूकम्परोधी भवनों के मॉडल 1, 2 और 3	भूकम्परोधी भवन निर्माण संबंधी जानकारी
5	शेक टेबल, मेशन ट्रेनिंग, बी.एस. टी.एन एवं भूकम्प सुरक्षा क्लिनिक	भूकम्परोधी भवनों के निर्माण संबंधी जानकारी एवं प्रदर्शन
6	स्टेट डिजास्टर प्रोफाइल एवं	आपदा जोखिम के आकलन संबंधी जानकारी

	क्षति का आकलन	
7	सीड्स	लू–गर्म हवाएं संबंधी जानकारी
8	एस.डी.आर.एफ	विभिन्न आपदाओं के प्रबंधन की जानकारी
9	एस.डी.आर.एफ	विभिन्न आपदाओं के प्रबंधन की जानकारी
10	एस.डी.आर.एफ	विभिन्न आपदाओं के प्रबंधन की जानकारी
11	बिहार भेटनरी कॉलेज	पशु टीकाकरण एवं रोगों से बचाव की जानकारी
12	एन.डी.आर.एफ	विभिन्न आपदाओं में बचाव संबंधी उपकरणों का प्रदर्शन एवं अन्य जानकारी
13	एन.डी.आर.एफ	विभिन्न आपदाओं में बचाव संबंधी उपकरणों का प्रदर्शन एवं जानकारी
14	एन.डी.आर.एफ	विभिन्न आपदाओं में बचाव संबंधी उपकरणों का प्रदर्शन एवं अन्य जानकारी
15	एन.डी.आर.एफ	विभिन्न आपदाओं में बचाव संबंधी उपकरणों का प्रदर्शन एवं अन्य जानकारी
16	बी.एस.डी.एम.ए. कैम्प ऑफिस	बिहार दिवस के आयोजनों की निगरानी केन्द्र
17	फूड प्वाइंट	दर्शकों के लिए खाद्य सामग्री केन्द्र
18 A	क्लॉक रूम	आवश्यक सामग्रियों को सुरक्षित रखने का केन्द्र
18 B	केरीटॉस	बाढ़ प्रबंधन एवं बचाव की जानकारी
19	बी.एस.डी.एम.ए.	डूबने एवं वज्रपात से बचाव संबंधी जानकारी एवं प्रदर्शन
20	वर्ल्ड विजन	आपदाओं से बचाव संबंधी खेल प्रतियोगिता एवं बाढ़ प्रबंधन की जानकारी
21	जी.पी.एस.भी.एस	जल–जीवन–हरियाली से संबंधित जानकारी
22	होमगार्ड एवं फायर सर्विसेज	अग्नि सुरक्षा संबंधी जानकारी एवं प्रदर्शन
23	होमगार्ड एवं फायर सर्विसेज	अग्नि सुरक्षा संबंधी जानकारी एवं प्रदर्शन
24	होमगार्ड एवं फॉयर सर्विसेज	अग्नि सुरक्षा संबंधी जानकारी एवं प्रदर्शन
25	बी.एस.डी.एम.ए.	अस्पताल अग्नि सुरक्षा संबंधी मॉडल का प्रदर्शन
26	जेण्डर इक्विटी कमिटी	महिला सशक्तिकरण संबंधी जानकारी
27	सिविल डिफेंस	उँचे भवनों से रेस्क्यू की जानकारी
28	सिविल डिफेंस	उँचे भवनों से रेस्क्यू की जानकारी
29	सेव द चिल्ड्रेन	पेंटिंग प्रतियोगिता एवं अन्य गतिविधियों के

		द्वारा बच्चों को आपदा प्रबंधन संबंधी जानकारी
30	सेव द चिल्ड्रेन	पेंटिंग प्रतियोगिता एवं अन्य गतिविधियों के द्वारा बच्चों को आपदा प्रबंधन संबंधी जानकारी
31	यूनिसेफ	मुख्यमंत्री विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम के विभिन्न आयामों की जानकारी
32	युगान्तर	बाढ़ पूर्व चेतावनी एवं महिलाओं के स्वास्थ्य से संबंधित जानकारी
33	कम्युनिटी पुलिस	ट्रैफिक पार्क द्वारा सड़क सुरक्षा संबंधी जानकारी एवं स्वास्थ्य कैम्प में जांच आदि
34	फूड प्वाइंट	दर्शकों के लिए खाद्य सामग्री का केन्द्र
35	डॉक्टर्स फॉर यू	स्वास्थ्य के बारे में जानकारी एवं जांच की सुविधा
36 A	उत्कर्ष एक पहल	स्वास्थ्य जांच शिविर एवं सलाह
36B	फीडबैक	बी.एस.डी.एम.ए. के पेवेलियन के बारे में दर्शकों की राय एवं सलाह संग्रहण केंद्र

मुजफ्फरपुर इंडस्ट्रीयल एरिया में
ब्यॉलर विस्फोटः संयुक्त समिति की ऑनलाइन बैठक

मुजफ्फरपुर जिले के बेला स्थित नुडल्स फैक्ट्री में ब्यॉलर विस्फोट की घटना को माननीय राष्ट्रीय हरित अधिकरण, प्रधान बैंच, दिल्ली ने संज्ञान लिया। अधिकरण द्वारा सुनवाई के दौरान अंतरिम आदेश पारित कर कई निर्देश दिये जिसमें दुर्घटना के कारणों, व्यक्तियों एवं पर्यावरण के क्षति, मुआवजा एवं क्षतिपूर्ति, पर्यावरण मापदण्डों के अनुपालन शामिल हैं। अधिकरण द्वारा सुरक्षा व्यवस्था की स्थल जाँच तथा भविष्य में ऐसी दुर्घटनाओं को रोकने के लिए सुरक्षात्मक उपाय करने हेतु छः सदस्यी संयुक्त समिति का गठन किया गया। गठित समिति इस प्रकार हैः–

1.पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार, राँची के एकीकृत क्षेत्रीय कार्यालय, राँची।
2.केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, दिल्ली
3.बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण पर्षद, पटना
4.जिलाधिकारी, मुजफ्फरपुर
5.राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, बिहार
6.निदेशक, उद्योग विभाग, बिहार

समिति का नोडल, बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण पर्षद को बनाया गया। बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण से जयंत रौशन, परियोजना पदाधिकारी प्रतिनिधि नामित किये गये। घटना के संबंध में बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण पर्षद् द्वारा दिनांक 24.01.2022 को ऑनलाइन मीटिंग हुई। मिटिंग में घटना के विभिन्न बिन्दुओं पर विस्तार से चर्चा हुई। इसके पूर्व 02.2.2022 को समिति द्वारा घटना स्थल का निरीक्षण किया गया था। मुजफ्फरपुर जिला के नोडल अधिकारी (आपदा प्रबंधन) एवं अन्य संबंधित अधिकारियों के साथ बैठक कर घटना का विश्लेषण किया गया। कमिटी द्वारा घटना स्थल के निरीक्षण के दौरान जिला प्रशासन से जानकारी प्राप्त की गयी एवं घटना से संबंधित कई तस्वीर प्राप्त किये गये। कमिटी द्वारा प्राप्त जानकारी एवं फोटोग्राफ्स के आधार पर ड्राफ्ट रिपोर्ट तैयार किया गया। इस संबंध में पुनः 25.02.2022 को Virtual Meeting में प्राप्त अन्य सुझावों को समाहित कर अंतिम प्रतिवेदन तैयार किया जा रहा है।

सड़क दुर्घटनाओं में त्वरित कार्रवाई के लिए बैठक

सड़क दुर्घटनाओं में प्रभावकारी कार्रवाई के लिए मानक संचालक प्रक्रिया (SOP) अतिआवश्यक है। इसके माध्यम से ही त्वरित कार्रवाई संभव होगा। एसओपी के लिए दिनांक 18.02.2022 को माननीय उपाध्यक्ष डा उदय कांत मिश्र की अध्यक्षता में बैठक हुई। बैठक में माननीय सदस्य श्री पी0एन0 राय एवं सड़क सुरक्षा समिति के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र कुमार मौजूद थे। इस बैठक में परिवहन विभाग, पथ विभाग, ग्रामीण कार्य विभाग, आपदा प्रबंधन विभाग, शिक्षा विभाग, सूचना एवं जन–संपर्क विभाग, नगर विकास एवं आवास विभाग, गृह विभाग (पुलिस), एस0डी0आर0एफ0, एन0डी0आर0एफ0, एन0सी0सी0, रेडक्रॉस, इंश्योरेंस कम्पनियां, ट्रांसपोर्ट वर्कर्स फेडरेशन, ऑटो रिक्शा चालक संघ एवं अन्य गैर सरकारी संस्थाओं के पदाधिकारियों/प्रतिनिधियों की भागीदारी हुई।

बैठक में मानक संचालक प्रक्रिया (SOP) के प्रारूप तैयार करने के लिए समिति का गठन किया गया। यह इस प्रकार है:–

1. श्री नरेन्द्र कुमार,विंग कमांडर, अध्यक्ष, सड़क सुरक्षा समिति –अध्यक्ष
2. डॉ0 विनोद भांटी, अध्यक्ष, आपदा एवं दिव्यांगता समिति, रेडक्रॉस सोसाइटी, बिहार शाखा, पटना
3. डॉ0 डी0के0 गुप्ता, अपर निदेशक, स्वास्थ्य विभाग, पटना
4. श्री धनंजय कुमार बम्पट, अधीक्षण अभियंता, पथ निर्माण विभाग
5. श्री के.के. झा, सेकेंड इन कमान, एस.डी.आर.एफ., बिहटा, पटना
6. श्री विनय कुमार, उप समादेष्ठा, एन.डी.आर.एफ., बिहटा, पटना
7. पुलिस अधीक्षक (यातायात), पटना के प्रतिनिधि
8. श्री राजीव कुमार, रोड सेफ्टी वाहन अभियंता, परिवहन विभाग, पटना
9. श्री निशांत राज, उप प्रबंधक, नेशनल इन्श्योरेंस का0लि0, पटना
10. श्री अनिरूद्ध प्रसाद, वरीय जिला समादेष्ठा, पटना
11. श्री धीरज कुमार, राज्य समन्वयक, एन.सी.सी. उड़ान, बिहार एवं झारखण्ड
12. श्री संतोष कुमार, सचिव, संकल्प ज्योति, पटना
13. डॉ. जीवन कुमार, परियोजना पदाधिकारी, बि0 रा0 आ0 प्र0 प्रा0–संयोजक

भूकम्परोधी निर्माण तकनीक की जानकारी के लिए प्रशिक्षण

राज्य में भूकंपरोधी भवन निर्माण के लिए अभियंताओं और राजमिस्त्रियों को प्रशिक्षित किया जा रहा है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में दिनांक 31 मार्च, 2022 तक राज्य के सभी (38) जिलों के साथ–साथ भूकम्पीय जोन V के 8 जिलों (किशनगंज, अररिया, सुपौल, मधेपुरा, सहरसा, दरभंगा, मधुबनी एवं सीतामढ़ी) में से दरभंगा एवं मधुबनी को छोड़ बांकी के 6 जिलों में भूकम्परोधी भवन निर्माण तकनीक पर अनुभवी राजमिस्त्रियों को सात दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण में दिनांक 31 फरवरी 2022 तक कुल 18,905 अनुभवी राजमिस्त्रियों एवं 38 जिलों में (मुख्यालय सहित) कुल 2676 असैनिक अभियंताओं को भवनों के भूकम्परोधी निर्माण एवं रेट्रोफिटिंग तकनीक के लिए प्रशिक्षित किया जा चुका है। वहीं भूकंपरोधी कार्यों एवं महत्वपूर्ण सरकारी भवनों का R.V.S. (Rapid Visual Screening) कराने के संबंध में आई.आई.टी., पटना, बिहटा एवं एन.आई.टी. पटना के साथ मिलकर कार्ययोजना तैयार किया गया है, **जबकि** राष्ट्रीय कौशल विकास निगम के साथ राजमिस्त्रियों के प्रशिक्षण मॉड्यूल पर ऑनलाईन मिटिंग की गयी है।

राजकीय पोलिटेक्निक, दरभंगा में निर्माणाधीन भूकम्प सुरक्षा क्लीनिक सह परामर्श केन्द्र के निर्माण का बिहार भूकम्प दूरमापी तंत्र से सम्बन्धित केन्द्रीय संग्रहण स्टेशन भवन की प्रगति के अनुश्रवण एवं बिहार भूकम्प आपदा प्रबंधन मार्गदर्शिका से गठन के संबंध में ड्राफ्टिंग कमिटी के सदस्यों एवं अन्य विशेषज्ञों के साथ समन्वय के कार्य भी किये गये।

वज्रपात से बचाव संबंधी मार्गदर्शिका के संदर्भ में मा. मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में हुई बैठक

वज्रपात से बचाव संबंधी मार्गदर्शिका के संदर्भ में माननीय मुख्यमंत्री –सह– अध्यक्ष बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की अध्यक्षता में बैठक सम्पन्न हुई। 24 मार्च 2022 को आयोजित इस बैठक में वज्रपात से होने वाली मौत को कम से कम करने के लिए विमर्श किया गया। बैठक में प्राप्त आंकड़ों के अनुसार 2020 में 443 एवं 2021 में 276 लोगों की मृत्यु हुई थी। अध्ययन के निष्कर्ष पर विस्तार से चर्चा हुई। इसमें बताया गया कि शहरी क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में वज्रपात से होने वाली मृत्यु अधिक है। वज्रपात के कारण मृत्यु मानसून के पूर्व एवं बाद में भी होती है। कृषि/ पशुपालन की गतिविधियों से जुड़े लोग अधिक प्रभावित होते हैं। अध्ययन रिपोर्ट में बताया गया है कि वज्रपात से लोगों और पशुओं की जानें चली जाती हैं, जो बच जाते हैं वह अपंगता के शिकार हो जाते हैं। उनकी आँखों की रोशनी का खत्म होना, सुनने की क्षमता समाप्त होना या कम होने आदि की समस्या होती है।

अतः इन घटनाओं की रोकथाम हेतु विभिन्न संस्थाओं एवं विभागों द्वारा की जाने वाली गतिविधियों तथा उत्तरदायित्व संबंधी मार्गदर्शिका माननीय अध्यक्ष के अवलोकन के लिये 24 मार्च, 2022 को हुई बैठक में प्रस्तुत किया गया। इस संदर्भ में माननीय मुख्यमंत्री द्वारा दिया गया दिशा–निर्देश इस प्रकार हैं:–

आपदा की स्थिति में त्वरित एवं प्रभावी ढंग से राहत एवं बचाव कार्यों के संचालन के लिए स्थायी तौर पर कार्य करें।

- एस0डी0आर0एफ0 में कर्मियों की संख्या और बढ़ाएं तथा उनका बेहतर प्रशिक्षण कराएं।
- प्रभावित क्षेत्रों के आकलन के आधार पर स्थल चयन कर रिस्पांस फैसिलिटी कम ट्रेनिंग संेटर की स्थापना करें।
- वज्रपात से होनेवाली क्षति को कम करने के लिए कार्य करें।
- वज्रपात से सुरक्षा हेतु लोगों को जागरूक करने के लिए व्यापक प्रचार–प्रसार कराएं।
- उन्नयन बिहार के पाठ्यक्रम में वज्रपात से सुरक्षा संबंधी जानकारी को शामिल करें।

मुख्यमंत्री विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम (MSSP)

विद्यालयों और स्कूली छात्रों/शिक्षकों को विभिन्न आपदाओं से सुरक्षा हेतु MSSP कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इस कार्यक्रम के तहत मदरसा के फोकल शिक्षकों के दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। दिनांक 07–08 मार्च, 2022 तक यूथ हॉस्टल, गांधी मैदान, पटना में आयोजित इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 36 मदरसा शिक्षकों ने सुरक्षित गुरूवार तथा शनिवार के बारे में विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किये। इस कार्यक्रम के तहत अब तक ऑनलाइन माध्यम से 273 और ऑफलाईन माध्यम से 36 शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया है। इस प्रकार अब तक कुल 309 शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जा चुका है।

मास्टर प्रशिक्षकों का रिफ्रेशर प्रशिक्षण – मास्टर प्रशिक्षकों का दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम, दो बैचों में क्रमशः 10–11 मार्च एवं 12–13 मार्च को यूनिसेफ के सहयोग से होटल चाणक्य, पटना में सम्पन्न हुआ।

जीविका दीदियों का
तीन दिवसीय मास्टर ट्रेनर के लिए प्रशिक्षण

जीविका दीदियों को "आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन" विषय पर प्रशिक्षित करने के लिए लगातार प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। तीन दीवसीय राज्य स्तरीय "मास्टर ट्रेनर" का प्रशिक्षण कार्यक्रम 10 अगस्त से आरंभ किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में क्षेत्रीय समन्वयक, सामुदायिक समन्वयक, जीविकोपार्जन विशेषज्ञ, युवा पेशेवर एवं प्रखण्ड परियोजना प्रबंधकों ने भाग लिया। तीन बैचों में सम्पन्न इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 65 प्रतिभागी प्रशिक्षित हुए। इस प्रकार अब तक दस बैचों के प्रशिक्षण में कुल 251 मास्टर ट्रेनर को प्रशिक्षित किया जा चुका है। ब्योरा इस प्रकार है:–

क्र0सं0	दिनांक	प्रतिभागी जिला	प्रतिभागियों की संख्या
1	10–12 अगस्त, 2021	पूर्णिया, अररिया, मधेपुरा एवं मधुबनी	27
2.	01–03 सितम्बर, 2021	मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी एवं शिवहर	22
3.	14–16 सितम्बर, 2021	गोपालगंज, प0 चम्पारण, पूर्वी चम्पारण एवं सिवान	28
4.	20–22 अक्टूबर, 2021	भागलपुर, दरभंगा, समस्तीपुर, बेगूसराय एवं कटिहार	31
5	16–18 नवम्बर, 2021	सहरसा, सुपौल एवं किशनगंज	17
6	07–09 दिसम्बर, 2021	लखीसराय, भोजपुर, बक्सर, सारण एवं वैशाली	32
7	21–23 दिसम्बर, 2021	मुंगेर, नालंदा, नवादा, बांका एवं वैशाली	29
8	02–04 मार्च 2022	गया, जहनाबाद एवं अरवल	21
9	14–16 मार्च 2022	कैमूर, औरंगाबाद, रोहतास एवं पटना	21
10	29–31 मार्च 2022	शेखपुरा, पटना, जमुई एवं खगड़िया	23
		कुल	251

अस्पताल अग्नि सुरक्षा कार्यक्रम

'अस्पताल अग्नि सुरक्षा कार्यक्रम' के तहत' 16 बिंदु अग्नि प्रवणता सूचकांक' के आधार पर मार्च, 2022 में राज्य के कुल 184 अस्पतालों का निरीक्षण किया गया जिसमें 21 सरकारी एवं 163 निजी अस्पताल शामिल हैं। इन अस्पतालों का निरीक्षण प्राधिकरण के दिशा निर्देश में अग्नि शाम सेवाएं के अधिकारियों द्वारा किया गया। विवरण इस प्रकार है:—

माह मार्च 2022 में अस्पतालों/नर्सिंग होमस् के भवनों में फायर ऑडिट का ऑकड़ा।

क्र0स0	जिला का नाम	कोविड अस्पताल			नन कोविड अस्पताल		
		सरकारी	निजी अस्पताल	कुल	सरकारी	निजी अस्पताल	कुल
1	पटना	0	0	0	0	9	9
2	नालंदा	0	0	0	0	2	2
3	रोहतास	0	0	0	0	1	1
4	भभुआ	0	0	0	0	0	0
5	भोजपुर	0	0	0	0	0	0
6	बक्सर	0	0	0	0	1	1
7	गया	0	0	0	0	12	12
8	जहानाबाद	0	0	0	0	0	0
9	अरवल	0	0	0	0	4	4
10	नवादा	0	0	0	0	9	9
11	औरंगाबाद	0	0	0	0	5	5
12	छपरा	0	0	0	0	0	0
13	सिवान	0	0	0	0	0	0
14	गोपालगंज	0	0	0	0	0	0
15	मुजफ्फरपुर	0	0	0	0	0	0
16	सीतामढ़ी	0	0	0	0	5	5
17	शिवहर	0	0	0	0	0	0
18	बेतिया	0	0	0	1	4	5
19	बगहा	0	0	0	0	0	0
20	मोतिहारी	0	0	0	0	40	40
21	वैशाली	0	0	0	0	0	0
22	दरभंगा	0	0	0	0	0	0
23	मधुबनी	0	0	0	0	0	0
24	समस्तीपुर	0	0	0	2	15	17
25	सहरसा	0	0	0	0	0	0
26	सुपौल	0	1	1	2	8	10
27	मधेपुरा	0	0	0	0	2	2
28	पूर्णिया	0	0	0	0	0	0
29	अररिया	0	0	0	2	2	4
30	किशनगंज	0	0	0	2	27	29
31	कटिहार	0	0	0	0	0	0
32	भागलपुर	0	0	0	0	6	6
33	नवगछिया	0	0	0	5	1	6
34	बाँका	0	0	0	2	1	3
35	मुंगेर	0	0	0	0	0	0
36	लखीसराय	0	0	0	0	1	1
37	शेखपुरा	0	0	0	0	0	0
38	जमुई	0	0	0	0	1	1
39	खगड़िया	0	0	0	4	5	9
40	बेगुसराय	0	0	0	1	1	2
कुल योग		0	1	1	21	162	183

इस प्रकार राज्य के अब तक कुल 4,235 अस्पतालों का अग्नि प्रवणता सूचकांक के आधार पर निरीक्षण किया जा चुका है।

बहु-आपदा जोखिम न्यूनीकरण के लिए सामुदायिक स्वयंसेवकों का प्रशिक्षण

बिहार बहु–आपदा प्रवण राज्य है। फलतः यहां विभिन्न प्रकार की आपदाएं आती रहती हैं। इन आपदाओं से बचाव के लिए पंचायतों के चुने हुए 10–10 नौजवानों को 12 दिवसीय प्रशिक्षण दिया जाता है। पंचायतों के ये नौजवान आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन हेतु जरूरी ज्ञान और हुनर सीख लें तो वे अपने पंचायत को आपदाओं से सुरक्षित रख सकते हैं। इस उद्देश्य से बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण राज्य के नौजवानों/नवयुवतियों को प्रशिक्षित कर आपदाओं के प्रत्युत्तर हेतु तैयार कर रहा है ताकि आपदाओं से सुरक्षा प्रदान करने में वे अपने समुदाय के लिए मददगार बन सकें। दिनांक 28.02.2022 से 11.03.2022 तक प० चम्पारण के कुल 49 स्वयंसेवकों को 12 दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रकार मार्च, 2022 तक पूर्णिया, मुजफ्फरपुर एवं प० चम्पारण जिले के कुल 339 स्वयंसेवकों को प्रशिक्षित किया जा चुका है।

पंचायत संसाधन केन्द्र (DPRC) के पदाधिकारियों का दो दिवसीय प्रशिक्षण

पंचायत संसाधन केन्द्र (DPRC) के पदाधिकारियों का "आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन" विषय पर दो दिवसीय मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 14–15 मार्च, 2022 को किया गया। इस प्रशिक्षण में जिला परियोजना प्रबंधक, जिला सामाजिक विकास समन्वयक, जिला अनुश्रवण एवं मूल्यांकन समन्वयक, जिला पंचायत वित्त समन्वयक, प्रखण्ड परियोजना प्रबंधक एव प्रखण्ड लेखा प्रबंधक ने भाग लिया। प्रशिक्षित मास्टर ट्रेनर के माध्यम से पंचायती राज विभाग द्वारा आयोजित प्रखण्डस्तरीय प्रशिक्षण में सभी जनप्रतिनिधियों को जागरूक करना है ताकि किसी भी आपदा के समय वे अपने पंचायत को सुरक्षित रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।

माह मार्च, 2022 तक आयोजित दो बैचों के प्रशिक्षण में कुल 52 मास्टर ट्रेनर्स को प्रशिक्षित किया गया। यह इस प्रकार हैः–

क्र0सं0	दिनांक	प्रतिभागी जिला	प्रतिभागियों की संख्या
1	23–24 फरवरी, 2022	पटना, वैशाली, भोजपुर एवं नालंदा	25
2	14–15 मार्च, 2022	नवादा, गया, जहानाबाद, सुपौल, किशनगंज, शिवहर, कटिहार, मुंगेर, सिवान, शेखपुरा, औरंगाबाद, मधेपुरा, बांका, सारण, पूर्णिया, अररिया, जमुई, खगड़िया, लखीसराय, सहरसा, बेगूसराय, मुजफ्फरपुर, अरवल, वैशाली, कैमूर, पटना एवं बक्सर	27
		कुल	52

बिहार में गर्म हवाएं/लू की कार्य योजना (Heat Action Plan) के लिए कार्यशाला

बिहार में गर्म हवाएं/लू से सुरक्षा के लिए कार्य योजना (Heat Action Plan) के क्रियान्वयन की अद्यतन स्थिति पर चर्चा हेतु कार्यशाला का आयोजन किया गया। दिनांक 3 मार्च, 2022 को आयोजित इस कार्यशाला में बिहार अग्निशमन सेवाएं, पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग, लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, आपदा प्रबंधन विभाग एवं कटिहार, बांका, भागलपुर, रोहतास, गोपालगंज, अरवल, सुपौल, औरंगाबाद, सिवान, जमुई, नवादा, जहानाबाद, शिवहर, मुजफ्फरपुर, मुंगेर, शेखपुरा, बेगूसराय, बक्सर, मधुबनी, सारण, अररिया, समस्तीपुर, भोजपुर, दरभंगा, नवादा, गया, सीतामढ़ी तथा लखीसराय जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यशाला में निर्णय लिया गया कि सभी हितभागी गर्म हवाओं/लू से बचाव के लिए Heat Action Plan के अनुसार आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित करेंगे ताकि लोगों को लू एवं गर्म हवाओं जैसी आपदा के समय सुरक्षा मिल सके।

NDMA और BSDMA द्वारा Heat Wave पर राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन

NDMA और BSDMA द्वारा संयुक्त रूप से 15 मार्च, 2022 को ऑनलाइन मोड में Heat Wave विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन प्राधिकरण के माननीय उपाध्यक्ष डॉ उदय कान्त मिश्र ने किया। अपने संबोधन में उन्होंने लू से बचाव के उपायों के बारे में विस्तार से जानकारी दी साथ ही समय रहते उचित कार्रवाई सुनिश्चित करने का अनुरोध किया। कार्यशाला में देश के विभिन्न हिस्सों से विशेषज्ञों ने भाग लिया और Heat Wave के दौरान इसके उचित प्रबंधन हेतु परामर्श दिया।

कार्यशाला के अंतिम सत्र में लू प्रभावित चार मुख्य राज्यों बिहार, उड़िसा, गुजरात और आंध्र प्रदेश के विशेषज्ञों द्वारा लू की घटनाएं तथा उससे बचाव के उपायों के बारे में प्रस्तुतिकरण के माध्यम से जानकारी दी।

मुख्यमंत्री विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रमः फोकल शिक्षकों का ऑनलाइन संवेदीकरण

राज्य के विद्यालयों में स्कूली छात्रों/शिक्षकों की विभिन्न आपदाओं से सुरक्षा हेतु MSSP कार्यक्रम चलाया जा रहा है। कोविड–19 की वजह से इस कार्यक्रम में व्यवधान उत्पन्न हुआ। इसके कारण Face to Face प्रशिक्षण कार्यक्रम स्थगित करना पड़ा। वैश्विक महामारी कोविड–19 के मद्देनजर सुरक्षित शनिवार कार्यक्रम विद्यालयों में भी स्थगित हैं। इस वैश्विक महामारी को ध्यान में रखते हुए प्राधिकरण द्वारा निर्णय लिया गया कि राज्य के सभी सरकारी, निजी, मदरसा, संस्कृत, कस्तुरबा गांधी आदि विद्यालयों के फोकल शिक्षकों को ऑनलाइन माध्यम से संवेदित किया जाय।

ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रथम चरण में मुजफ्फरपुर और समस्तीपुर के फोकल शिक्षकों को प्रस्तुतीकरण के माध्यम से प्रशिक्षित किया गया। 25 जनवरी, 2022 को आयोजित इस ऑनलाइन प्रशिक्षण में विशेषज्ञों द्वारा कोविड से संबंधित प्रश्नोत्तरी सत्र में प्रतिभागियों के सवालों का जबाव दिया गया। जनवरी और फरवरी में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम का विवरण निम्न हैः–

क्र.सं	दिनांक	जिला	प्रतिभागी
1	25.01.2022	मुजफ्फरपुर	216
2		समस्तीपुर	276

क्र.सं	दिनांक	जिला	प्रतिभागी
1	01.02..2022	नालन्दा	276
2		मधुबनी	312
3	08.02.2022	दरभंगा	293
4		पूर्वी चम्पारण	264
5	15.02.2022	पश्चिमी चम्पारण	283
6		पूर्णिया	257
7	22.02.2022	बांका	425
8		जमुई	273

सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिये ऑनलाइन परिचर्चा

सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए 24 जनवरी, 2022 को ऑनलाइन परिचर्चा का आयोजन किया गया। परिचर्चा में परिवहन विभाग, आपदा प्रबंधन विभाग, पथ निर्माण विभाग, ग्रामीण कार्य विभाग, शिक्षा विभाग, गृह विभाग (पुलिस) एवं अन्य विभागों/संस्थाओं के पदाधिकारी/प्रतिनिधि शामिल हुए। प्राधिकरण द्वारा गठित सड़क सुरक्षा समिति के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र कुमार सिंह, विंग कमाण्डर की अध्यक्षता में हुई परिचर्चा में सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए निम्न बिन्दुओं पर गहन चर्चा हुई।

1. संबंधित विभागों/हितधारकों के प्रयास की आवश्यकता
2. जन–जागरूकता एवं क्षमतावर्द्धन
3. वाहन चालकों की दक्षता में वृद्धि की आवश्यकता
4. हेलमेट का उपयोग सुनिश्चित करना एवं दो पहिया वाहनों में स्पीड गवरनर्स लगाया जाना।
5. Black Spot Rectification
6. Good Samaritan Law and Trauma Centre
7. मेडिकल फर्स्ट रिस्पाँडर का प्रशिक्षण
8. एन0सी0सी0/एन0एस0एस0 वॉलेंटियर्स के बीच जिला स्तरीय सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन
9. सड़क सुरक्षा विषय पर लघु विडियो फिल्म तैयार करना

कोविड–19 संक्रमण से बचाव एवं सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए ऑनलाईन संवेदीकरण

कोविड–19 संक्रमण से बचाव के उपाय एवं सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम के उद्देश्य से प्राधिकरण द्वारा एन0सी0सी0, उड़ान, पटना के सहयोग से फरवरी 2022 में राज्य के 18 जिलों के एन0सी0सी0 Volunteers का ऑनलाईन संवेदीकरण कार्यक्रम आयोजित हुए।

इस संवेदीकरण कार्यक्रम में विशेषज्ञों ने कोविड–19 वायरस के उत्परिवर्त्तन और इससे बचाव की जानकारी दी।

कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों को तीव्र गति से वाहन चलाने, वाहन चलाते समय मोबाइल का प्रयोग करने, लहरियाकट वाहन चलाने, थके हुए ड्राइवर द्वारा वाहन चलाने एवं अन्य सड़क एवं वाहन से संबंधित तकनीकी खराबी आदि की वजह से होने वाली सड़क दुर्घटनाओं और इससे बचाव की जानकारी दी गयी। सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम के उपायों (क्या करें, क्या नहीं करें) के बारे में प्रस्तुतीकरण द्वारा विस्तार से जानकारी दी गयी।

सड़क सुरक्षा के लिए उपयोगी सूचनात्मक, वैधानिक सचेतक चिन्हों और सड़क के किनारे लगे माइल स्टोन के बारे में भी प्रतिभागियों को जानकारी से अवगत कराया गया। देश के स्तर पर राज्य में 01 सितम्बर, 2019 से लागू किए नये मोटर वाहन एक्ट एवं संशोधित जुर्माने/दंड की जानकारी दी गई।

प्रतिभागियों को प्रस्तुतीकरण के माध्यम से अस्पताल पूर्व चिकित्सा, दुर्घटनास्थल पर बरती जाने वाली सावधानियों एवं अन्य सामान्य नियमों की भी जानकारी दी गयी।

यह कार्यक्रम निम्न जिलों में संचालित किया गया:–

क्र0 सं0	जिला का नाम	दिनांक	प्रतिभागियों की संख्या
1.	बेगूसराय, लखीसराय, शेखपुरा, खगड़िया, कटिहार, अररिया एवं किशनगंज	10.02.2022	70
2.	भागलपुर, मुंगेर, पूर्णिया, बांका, जमुई, सहरसा सुपौल एवं मधेपुरा	17.02.2022	100
3	पटना, अरवल एवं समस्तीपुर	24.02.2022	60
कुल संख्या			**230**

कोविड–19 संक्रमण से बचाव के उपाय एवं डूबने से होने वाली मौतों की रोकथाम के लिए ऑनलाईन संवेदीकरण

कोविड–19 संक्रमण से बचाव एवं डूबने से होने वाली मौतों की रोकथाम के उद्देश्य से बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा फरवरी 2022 में 15 जिलों के समुदाय एवं स्थानीय प्रशासन, पंचायत प्रतिनिधियों आदि के लिए संवेदीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में विशेषज्ञों द्वारा कोविड–19 वायरस से बचाव एवं बरती जाने वाली सावधनियों की जानकारी दी। विशेषज्ञों द्वारा डूबने से होने वाली मौत के कारणों, बचाव के उपाय, डूबते हुये व्यक्ति को बचाने के तरीके आदि की जानकारी वार्ता एवं प्रस्तुतीकरण के माध्यम से दिया गया। उन्हें जीवन रक्षा तकनीक, डूबते हुए व्यक्ति को बचाने के तरीके एवं प्राथमिक उपचार की विधियों के बारे में वीडियो डिमॉन्सट्रेशन के माध्यम से संवेदीकरण किया गया।

कार्यक्रम विवरण इस प्रकार हैः–

क्र0सं0	जिला का नाम	दिनांक	प्रतिभागियों की संख्या
1.	नालंदा, गया एवं बेगूसराय	03/02/2022 (प्रथम पाली)	80
2.	पूर्णिया, लखीसराय एवं भागलपुर	03/02/2022 (दूसरी पाली)	70
3	शिवहर, कटिहार एवं गोपालगंज	10/02/2022	60
4	बक्सर, कैमूर एवं दरभंगा	17/02/2022	80
5	सीतामढ़ी, नवादा एवं पश्चिम चम्पारण	24/02/2022	150
कुल संख्या			**440**

जीविका दीदियों एवं पदाधिकारियों का कोविड-19 संक्रमण एवं अगलगी से बचाव के लिए संवेदीकरण

"आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन" विषयक प्रशिक्षण के अन्तर्गत जीविका दीदियों एवं पदाधिकारियों को कोविड–19 संक्रमण, घर में ही आइसोलेशन के दौरान की सावधानियाँ, शीतलहर एवं अगलगी से बचाव विषय पर वेबिनार के माध्यम से संवेदीकरण कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में जिला एवं प्रखंड परियोजना प्रबंधक, क्षेत्रीय समन्वयक, सामुदायिक समन्वयक एवं जीविका दीदियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में कोविड महामारी से बचाव एवं घर में ही आइसोलेशन के दौरान बरती जाने वाली सावधानियां, शीतलहर एवं अगलगी से बचाव के बारे में विशेषज्ञों द्वारा प्रस्तुतीकरण के माध्यम से जानकारी दी गई। कोविड से संबंधित प्रश्नोत्तरी सत्र में एम्स, पटना के डॉक्टर ने प्रतिभागियों के सवालों का जवाब दिया। फरवरी, 2022 में आयोजित वेबिनार में 480 प्रतिभागियों ने भाग लिया। ब्यौरा इस प्रकार हैः–

क्र0 सं0	दिनांक	प्रतिभागी जिला	प्रतिभागियों की संख्या
1	07.02.2022	अररिया, पूर्णिया, वैशाली एवं बांका	**79**
2	14.02.2022	जमुई, गोपालगंज, नवादा एवं पश्चिम चम्पारण, अरवल, रोहतास	**137**
3	21.02.2022	गया, जहानाबाद, औरंगाबाद, खगड़िया, भागलपुर एवं भोजपुर	**67**
4	28.02.2022	कैमूर, बक्सर, शेखपुरा, बेगूसराय, मुंगेर, लखीसराय	**197**
		कुल	**480**

पंचायतीराज कर्मियों का संवेदीकरण

राज्य के विद्यालयों और स्कूली छात्रों/शिक्षकों की विभिन्न आपदाओं से सुरक्षा हेतु MSSP कार्यक्रम चलाया जा रहा है। कोरोना संक्रमण के कारण इस कार्यक्रम में अवरोध उत्पन्न हो रहा है। इसके कारण Face to Face प्रशिक्षण कार्यक्रम स्थगित हैं। इसलिए पंचायती राज कर्मियों का ऑनलाइन संवेदीकरण करने का निर्णय लिया गया। इसके लिए 28.01.2022 को आयोजित बेविनार में पटना और भोजपुर जिलों के पंचायती राज कर्मियों का संवेदीकरण किया गया।

Disaster Risk Reduction & Resilience in Cities विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण

हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड (HUDCO) ने 15–16 फरवरी 2022 को "Disaster Risk Reduction & Resilience in Cities" विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में परियोजना पदाधिकारी श्री जयंत रौशन एव श्री अशोक कुमार शर्मा शामिल हुए एवं संबंधित विषयों की जानकारी प्राप्त की।

स्लम टास्क फोर्स के सदस्यों का प्रशिक्षण

BSDMA और SDRF के द्वारा वर्ल्ड विजन के Slum Task Force के 50 सदस्यों (30 लड़के 20 लड़कियों) का दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 14–15 मार्च, 2022 को संपन्न। इस प्रशिक्षण में टास्क फोर्स के सदस्यों को आपदा प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी गई। यह आयोजन होटल जीया ग्रांड, पटना में सम्पन्न हुआ जिसमें उन्हें आपदा प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराया गया।

बिहार राज्य आपदा संसाधन नेटर्वक (BSDRN) की समीक्षा

राज्य में BSDRN पोर्टल पर सभी जिलों के द्वारा संसाधनों की इलेक्ट्रॉनिक इन्वेंटरी तैयार की जा रही है ताकि विभिन्न आपदाओं के दौरान विभिन्न संसाधनों की उपलब्धता की जानकारी आसानी से प्राप्त हो सके। संसाधन कहां उपलब्ध हैं तथा उसे कैसे प्राप्त किया जाए संबंधी सभी जानकारी के साथ संपर्क फोन नम्बर इत्यादि की विवरणी पोर्टल के माध्यम से प्राप्त होती हैं।

संसाधनों की जानकारी के लिए दिनांक 08 मार्च, 2022 को गया और दिनांक 29 मार्च, 2022 को सीतामढ़ी जिले की समीक्षा बैठक प्राधिकरण के सभागार में हुई। समीक्षा बैठक की अध्यक्षता माननीय सदस्य श्री पी.एन.राय ने की। बैठक में गया जिला के श्री दीपक कुमार और सीतामढ़ी जिला के श्रीमती सुप्रिया, जिला कल्सटेंट ने भाग लिया। दोनों जिलों को पोर्टल के लगातार अद्यतन हेतु उचित निदेश दिये गये।

खबरें तस्वीरों में

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण
BIHAR STATE DISASTER MANAGEMENT AUTHORITY

BSDMA
BIHAR
BSDMA
BIHAR

World Vision

holmatro
holmatro

Carpenter kit

वज्रपात से बचाव,

सेवा परमो धर्मः
नागरिक सुरक्षा महानिदेशालय
(आपदा प्रबंधन विभाग)
सेवा परमो धर्मः

शराब पीकर
गाड़ी ना चलाएं

सुरक्षित शनिवार
वार्षिक सारणी
जनवरी
फरवरी
मार्च
अप्रैल
मई
जून
अगस्त
सितम्बर
दिसम्बर
unicef
घर पर हों या
जाएँ बाहर
अपनाएँ कोविड
अनुकूल व्यवहार

बिहार दिवस 2022
TRAFFIC PARK
सड़क सुरक्षा, जीवन रक्षा
पुराने भवनों का रेट्रोफिटिंग तकनीक
भूकम्परोधी

जीवन
हरियाली
जागरूक बिहार
सुरक्षित बिहार
धैर्य रखोगे तो
जान बचा पाओगे
जानकारी रखना
आपदा से बचना

जलवायु परिवर्तन

मानवजनित कारणों से होने वाले जलवायु परिवर्तन आज समाज के समक्ष बड़ा संकट है,
इससे ससमय निपटना वर्तमान की बड़ी चुनौती है।

- जलवायु परिवर्तन का सर्वाधिक प्रभाव मौसम चक्र पर हो रहा है।
- अत्यधिक गर्मी, सर्दी तथा वर्षापात की अनियमितता जलवायु परिवर्तन के परिणाम हैं।
- बिहार राज्य की लगभग तीन चौथाई आबादी जो अपनी जीविका के लिए कृषि पर निर्भर हैं, जलवायु परिवर्तन से सर्वाधिक प्रभावित हो रहे हैं।
- जलवायु परिवर्तन कृषि के साथ–साथ स्वास्थ्य एवं अन्य क्षेत्रों को भी कुप्रभावित कर रहा है।
- जलवायु परिवर्तन के कारकों को न्यून करना एवं इसके साथ सामंजस्य स्थापित कर इस समस्या का काफी हद तक समाधान किया जा सकता है।
- सरकार द्वारा इस समस्या के समाधान हेतु जल–जीवन–हरियाली कार्यक्रम चलाया जा रहा है।

जलवायु परिवर्तन

पृथ्वी के तापमान में वृद्धि का मुख्य कारण वातावरण में ग्रीन हाउस गैसों यथा कार्बन–डाइऑक्साईड, मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड इत्यादि की मात्रा में वृद्धि होना है।

- जीवाश्म ईंधन, विद्युत, एयर कंडिश्नर इत्यादि का कम से कम उपयोग कर जलवायु परिवर्तन को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है।
- बदलते मौसम के अनुरूप कृषि पद्धति एवं फसलचक्र परिवर्तन कर कृषि पर जलवायु परिवर्तन के कुप्रभावों को काफी हद तक कम किया जा सकता है।
- वृहद् स्तर पर वृक्षारोपण, जल संचयन, पर्यावरण संरक्षण, ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को न्यून कर जलवायु परिवर्तन के कारकों पर नियंत्रण पाया जा सकता है।
- समग्र जल स्त्रोत प्रबंधन विधि जैसे–तालाब/पोखर निर्माण एवं साफ सफाई, आहर–पईन निर्माण तथा संरक्षण, कुओं का जीर्णोद्धार एवं उड़ाही करवाना।

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण
(आपदा प्रबंधन विभाग, बिहार सरकार)

बिहार सरकार